जो गुजऱ्या बीच इन सूरत, खबर हुकम हकीकत।
ए जो कही आयत साहेब, सो पढ़ी मैं कहे महंमद।। ११ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज और मोमिनों के बीच जो कुछ बीता है, वह सब इशारों से कुरान में लिखा है। आयतों को श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि मैंने पढ़ा है।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ३३९ ।।

ए रोज नाहीं खिलाफ, होसी नव सदी आगूं मिलाप।
कलाम अल्ला का जाहेर नूर, अग्यारे सिपारे का जहूर।। १ ।।

कुरान के ग्यारहवें सिपारे में स्पष्ट लिखा है कि नौवीं सदी के आगे रूहों का मिलन शुरू होगा। इस बात को कोई बदल नहीं सकता।

ए लिख्या वास्ते सबब इन, बदले नेक खूब कारन।
बीच राह हकके एक, तिन नेकोंका बदला नेक।। २ ।।

यह इस कारण से लिखा है कि नेकी का बदला अच्छी तरह से मिलेगा। इस समय श्री राजजी महाराज के स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज नेक-चलन वालों को अच्छा फल देंगे।

उनसों ज्यादा मिल्या है जित, बोहोतक सवाब लेना है तित।
बोहोतायत बीच यों नबिएं, सो मिसल गाजियों बीच जाहेर किए।। ३ ।।

श्री देवचन्द्रजी श्यामा महारानी से अधिक वाणी श्री प्राणनाथजी को मिली। इसका सबसे अधिक लाभ लेना है। बोहोतायत किताब के अन्दर रसूल साहब ने लिखा है कि उस कुलजम सरूप की वाणी को अर्श की रूहों में श्री प्राणनाथजी जाहिर करेंगे।

तिन पर बंदगी एक करे कोए, सो हजार बंदगियों से नेक होए।
तिनको सवाब बड़ा बुजरक, देवे एही साहेब हक।। ४ ।।

श्री प्राणनाथजी के ऊपर जो एक सिजदा बजाएगा उसको हजार सिजदों का फल मिलेगा। ऐसा बड़ा लाभ देने वाले श्री राजजी के स्वरूप श्री प्राणनाथजी महाराज हैं।

नव सै नब्बे हुए बरस, और नव मास उतरे सरस।
तिनसे दूसरा होए मकबूल, सो ए बंदगियां करे कबूल।। ५ ।।

जब नौ सौ नब्बे वर्ष और नौ महीने मुहम्मद साहब के बाद हुए तब मलकी सूरत श्री श्यामा महारानी देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुए। यही अपने दूसरे तन श्री प्राणनाथजी के अन्दर बैठकर सबकी बन्दगी स्वीकार करेंगे।

सो बकसीस करे सब ए, बदले एक के हजार दे।
इनके बराबर ऐसे कर, कोसिस करे खुदाकी राह पर।। ६ ।।

सभी को उनकी बन्दगी के अनुसार एक के बदले हजार गुना फल देंगे और कोशिश करके सबको खुदा के सच्चे रास्ते निजानन्द सम्प्रदाय पर चलाएंगे। इनके जैसा करने वाला दूसरा कोई नहीं होगा।

Nijanand App

खिलाफ राह चलें काफर, दुनियां को देखावें डर।
ए जो सरत कही इस दिन, उस बखत उतरे मोमिन।।७।।

इनके बताए रास्ते से जो उल्टे चलते हैं, वह दुनियां को डर दिखाते हैं (यह इशारा बिहारीजी महाराज पर है)। यह वही समय है जब मोमिनों को पहचान होगी।

होए आवाज लड़ाई बखत, तिस पर मोमिन करें कस्त।
कस्त करें सब आरब, ए आयत उतरी हैं तब।।८।।

कुरान में लिखा है कि रूह अल्लाह जब दज्जाल को मारेंगे तो संसार में बड़ा शोर-शराबा होगा। इसका बातूनी अर्थ है कि जब श्यामा महारानी अपने दूसरे तन श्री मेहराज ठाकुर के अन्दर बैठकर कुलजम सरूप की वाणी जाहिर करेंगी तो वाणी गूंज उठेगी और मोमिन कुर्बानी देंगे तब अति अधिक कष्ट उठाएंगे और उसी समय ईश्वरीसृष्टि भी इनके साथ कष्ट उठाएंगी। ऐसा ही फुरमान खुदा की तरफ से आया, जो लिखा है।

ना रवा मोमिन ना चाहें, घर छोड़ बाहेर लड़ने को जाएं।
होए सेहेर उजाड़ बखत सोए, खाने पीने की ढील होए।।९।।

मोमिन कभी भी लड़ें-झगड़ेंगे नहीं। उनको बाहर की लड़ाई लड़ने का हुकम नहीं है। वह अपने शरीर के अन्दर गुण, अंग इन्द्रियों से लड़ते हैं। कुरान में लिखा है कि जब रूह अल्लाह शैतान को मारेंगे तो शहर उजाड़ हो जाएंगे और खाने-पीने तक को नहीं मिलेगा, अर्थात् सब दुनियां वाले धर्म का रास्ता छोड़कर शहर के बाजारों में नाच, गाना, नाटक, तमाशा, हंसी, ठिठोली, निंदा, चुगली, दंगा, फसाद, मार-पीट में रुचि लेंगे और दुनियां वाले शरीर का आहार मेवा, मिष्ठान में ही रुचि रखेंगे, मन्दिर उजड़ जाएंगे, अर्थात् आत्मा का आहार कहीं नहीं मिलेगा। जहां वाणी की चर्चा होगी वहां नहीं जाएंगे। जहां मन्दिर में खाने को मिलेगा, वहां पहुंच जाएंगे।

जब पोहोंचे एह सरत, बाहेर न जाना तिन बखत।
हर एक जमात बोहोत मेला, हर इन की सों मुराद किबला।।१०।।

खुदा ने मोमिनों को आदेश दिया है कि जब सारे संसार में इसका वातावरण धर्म के विपरीत बन जाए उस समय दूसरे को समझाने बाहर नहीं जाना, क्योंकि सब धर्म सम्प्रदाय वालों की भीड़ इकट्ठी होगी और सभी कह रहे होंगे कि हम ही सबकी इच्छा पूरी करेंगे और हम ही परमात्मा के पास पहुंचाने वाले हैं।

जिन सिर कह्या वह गाम, तिन छोड़ न जाए लड़ाई काम।
बाकी लोक पीछे जो रहे, जब वह तलब दानाई चहे।।११।।

जो परमधाम के रहने वाले मोमिन हैं, वह अपने धर्म का रास्ता छोड़कर दुनियां वालों से लड़ने नहीं जाएंगे। बाकी संसार के लोग जो पीछे रहेंगे, वह केवल अपनी चतुराई की चिन्ता करेंगे। अपनी चतुराई से लड़ना चाहेंगे।

जो कोई गामके हैं, तिनको इलम दीनका कहे।
सवा नव बरस दसमी के बाकी, इत थें मजकूर भई है ताकी।।१२।।

जो कोई परमधाम के रहने वाले हैं, उनके वास्ते कुलजम सरूप की वाणी कही है। जिस की शुरूआत दसवीं सदी में जब सवा नौ वर्ष बाकी थे, सम्वत् १६३८ से (लीला) हुई।

Nijanand App